ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol.-5* Issue-7* September- 2020
Innovation The Research Concept

गोरखपुर जनपद में अनुसूचित जाति के स्थानिक एवं कालिक वितरण प्रतिरूप का भौगोलिक अध्ययन

Geographical Study of Spatial and Temporal Distribution Pattern of Scheduled Caste in Gorakhpur District

Paper Submission: 15/09/2020, Date of Acceptance: 26/09/2020, Date of Publication: 27/09/2020

दुर्गावती यादव
शोध छात्रा,
भूगोल विभाग,
दीनदयाल उपाध्याय
गोरखपुर विश्वविद्यालय,
गोरखपुर, उत्तर प्रदेश, भारत

सारांश

प्रस्तुत शोध–पत्र में गोरखपुर जनपद में अनुसूचित जाति की जनसंख्या के वितरण का अध्ययन कालिक एवं क्षेत्रीय सन्दर्भ में किया गया है। 2001 तथा 2011 के दशकों में जनसंख्या में हुए परिवर्तन का अध्ययन विकासखण्ड के स्तर पर किया गया है, जिससे जनपद में पायी जाने वाली ग्रामीण तथा नगरीय जनसंख्या वितरण की विभिन्नतायें तथा विशिष्टताएँ स्पष्ट होती है। जनपद में अनुसूचित जाति की जनसंख्या का वितरण एक समान नहीं है। जनपद के वो भाग जो ग्रामीण हैं तथा जो पुराने बसे हैं एवं जहां पर कृषि कार्यों की अधिकता है वहां पर अनुसूचित जाति की जनसंख्या का बसाव अधिक है, जैसे – जनपद के दक्षिणी तथा दक्षिणी – पश्चिमी भाग में अनुसूचित जाति की जनसंख्या का वितरण अति उच्च है, तथा जनपद के उत्तरी तथा उत्तरी – पूर्वी भाग में इनका बसाव अति निम्न है।

In the paper presented, the distribution of scheduled caste population in Gorakhpur district has been studied in a periodical and regional context. The change in population in the decades of 2001 and 2011 has been studied at the development level, which explains the variations and characteristics of the rural and urban population distribution found in the district. The distribution of scheduled caste population in the district is not uniform. Scheduled Caste population is more inhabited in those parts of the district which are rural and old inhabited and where there is a lot of agricultural work, such as the distribution of Scheduled Caste population in the southern and southern-western part of the district is very high. Is, and their settlement in the northern and north-eastern part of the district is very low.

मुख्य शब्द : अनुसूचित जाति, संरचना और प्रजाति, साक्षरता, शिक्षा, भाषा, धर्म, राष्ट्रीयता ।
Scheduled Castes, Structure and Species, Literacy, Education, Education, Language, Religion, Nationality.

प्रस्तावना

किसी भी देश की जनसंख्या उसकी सबसे बड़ी पूंजी होती है। एक ओर यह उत्पादन का प्रमुख साधन है, तो वहीं दूसरी ओर अर्थव्यवस्था के समस्त कार्यों द्वारा जीवन की अनिवार्य दशाओं को सुधारना इसका अन्तिम उद्देश्य भी है। किसी भी देश की जनसंख्या अपने उपर्युक्त आकार, श्रेष्ठता और गुणात्मक विशेषताओं के आधार पर ही विकसित हो सकती है। इसके अभाव में बेरोजगारी, अल्प–विकास, कुपोषण, भ्रष्टाचार, भुखमरी आदि समस्यायें उत्पन होती हैं और देश का विकास अवरुद्ध हो जाता है। इस परिपेक्ष्य मे जनसंख्या का भौगोलिक अध्ययन अनिवार्य हो जाता है।

जनसंख्या के भौगोलिक अध्ययन के अंतर्गत जनसंख्या की निरपेक्ष संख्या जैसे – वृद्धि, वितरण, घनत्व और घनत्व के क्षेत्रीय प्रारूप में भिन्नता, उसमें कालिक तथा स्थानिक परिवर्तन, जनसंख्या की भौतिक विशेषतायें जैसे– आयु, लिंग, संरचना और प्रजाति, सामाजिक लक्षण जैसे – वैवाहिक स्थिति, साक्षरता, शिक्षा, भाषा, धर्म, राष्ट्रीयता, परिवार, संख्या, निवास्य, जाति वर्ग समूह तथा आर्थिक लक्षण जैसे – उधोग व्यापार, आय, आदि जीवन की अनिवार्य

दशाएं तथा जनसंख्या की गतिशीलता से सम्बंधित जन्म–दर, मृत्यु–दर, आवास– प्रवास, परिवर्तन आदि का समेकित अध्ययन किया जाता है।

जनसंख्या का कालिक परिवर्तन जनसंख्या वृद्धि मे निहित है, जो जनसंख्या की प्राकृतिक वृद्धि और आव्रजन–प्रवजन का प्रतिफल है। इस परिवर्तन में क्षेत्रीय विभिन्नता पायी जाती है। अनेक विकसित देशों में जनसंख्या वृद्धि न्यून तथा ऋणात्मक है, जबकि विकासशील देशों में इसके विपरीत विस्फोट की स्थिति है।

जनसंख्या वितरण एवं जनसंख्या घनत्व दो परस्पर सम्बंधित लेकिन भिन्न संकल्पनाएं हैं। पारस्परिक सम्बंधों के आधार पर दोनों का एक ही अध्याय में अध्ययन करना अधिक तर्कसंगत हो जाता है। गौर से देखा जाये तो पता चलेगा की मानव सभ्यता के विकास एवं उसमें आयी जटिलताओं के साथ न तो जनसंख्या वितरण ही सरल प्रारूप में मिलता है और न ही इसके वितरण स्पष्टीकरण को ढूँढ पाना इतना आसान कार्य रह गया है। अब जनसंख्या वितरण पहले से बहुत अधिक क्षेत्रीय विस्तार लिए हुए है और साथ ही साथ राजनैतिक एवं प्रशासनिक इकाईयों की संख्या भी बहुत बढ़ गयी है। निश्चय ही अब जनसंख्या वितरण एवं घनत्व का अध्ययन एक जटिल कार्य हो गया है, लेकिन जनसंख्या भूगोलविद् के लिए जनसंख्या वृद्धि, घनत्व व वितरण का सफलतापूर्वक विश्लेषण करना बेहद महत्वपूर्ण है। किसी क्षेत्र विशेष की सामाजिक – आर्थिक अध्ययन में जनसांख्यिकीय घटकों का विश्लेषण मुख्य आधार का काम करता है।

सर्वप्रथम जनसंख्या वितरण तथा जनसंख्या घनत्व के अन्तर को स्पष्ट करना आवश्यक है। जनसंख्या वितरण में अधिक बल स्थिगत, जबकि जनसंख्या घनत्व में अनुपातिक सम्बन्ध पर दिया जाता है। जनसंख्या वितरण क्षेत्रीय प्रारूप को इंगित करता है। जबकि दूसरे का सम्बन्ध जनसंख्या आकार एवं क्षेत्रफल से होता है।

किसी क्षेत्र या प्रदेश की जनसंख्या सम्बन्धी विशेषताओं में जनसंख्या वितरण और घनत्व का महत्वपूर्ण स्थान होता है। किसी क्षेत्र की जनांकिकी विशेषताओं विभिन्न भौतिक एवं आर्थिक, सामाजिक – सांस्कृतिक अर्न्तसम्बन्ध तथा क्षेत्रीय भिन्नता के सम्यक ज्ञान हेतु जनसंख्या वितरण एवं घनत्व का अध्ययन किया जाता है। जनसंख्या वितरण के अन्तर्गत जनसंख्या के यथार्थ प्रारूप पर ध्यान दिया जाता है (मानव के इस विस्तार या फैलाव के आधार पर प्रकीर्ण, जमघट या पुंजीभूत जनसंख्या वितरण का प्रतिरूप उत्पन्न हो सकता है (पाण्डेय, 1972) ।)

जनसंख्या का वितरण, संकेन्द्रण की मात्रा तथा घनत्व निर्द्रिष्ट प्रदेश की भौगोलिक व्यक्तित्व को प्रकट करता है। जनसंख्या वितरण प्रतिरूप वस्तुतः भौगोलिक और सांस्कृतिक दोनों ही कारकों की अंतःक्रिया का परिणाम होता है। वर्तमान जनसंख्या वितरण प्रतिरूप पर भूतकालीन क्रियाकलापों का प्रभाव स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है। परिवर्तनशील समय के सन्दर्भ में क्षेत्रीय वितरणों की व्यवस्था सर्वथा कठिन हो सकती है, क्योंकि यह मानवीय अनुभवों एवं मूल्यों के परिवर्तन के साथ परिवर्तित होते रहते हैं।

पृथ्वी पर जनसंख्या के वितरण में प्राचीन काल से लेकर अब तक निरन्तर परिवर्तन हो रहा है, साथ ही भविष्य में भी होता रहेगा, परन्तु भविष्य में परिवर्तन किस प्रकार के होंगे यह हम नहीं जानते । वर्तमान जनसंख्या वितरण की सबसे मुख्य विशेषता यह है, की पृथ्वी के धरातल पर मानव का निवास विषम है, जिस विषमता के अनेक कारण है, जो बहुत जटिल हैं (तिवारी 1972)।

गोरखपुर जनपद में भी जनसंख्या वितरण को भौगोलिक, सामाजिक, एवं सांस्कृतिक तत्व अत्यधिक प्रभावित करते हैं, जिसके कारण यहां पर जनसंख्या वितरण का संकेन्द्रण या बिखराव एक समान नही है। जनपद के उन भागों में जो पुराने बसाव वाले क्षेत्र है, अति सघन जनसंख्या वितरण पाया जाता है, तथा इन क्षेत्रों से बाहर की ओर जाने पर वितरण की सघनता में बिखराव आ जाता है। जनसंख्या एवं इसके विभिन्न तत्वों की विशेषताएं किसी क्षेत्र विशेष के लोगों के जीवन की गुणवत्ता को प्रभावित करने वाले प्रमुख तत्व हैं, जिनका अध्ययन मानव संसाधन के गुणात्मक जीवन स्तर में परिवर्तन के लिए अपरिहार्य है। यदि बढ़ती हुई जनसंख्या एवं जनसंख्या के बढ़ते दबाव के परिणामस्वरूप उसके अनुरूप विकास में आवश्यक अवस्थापनात्मक तत्वों का विस्तार नहीं होगा तो मानव के जीवन स्तर में गुणात्मक परिवर्तन नहीं होगा।

जनसंख्या वितरण पर प्राकृतिक वातावरण के तत्वों, क्षेत्र की उत्पादन क्षमता के प्रभावक तत्वों एवं क्षेत्र की उत्पादन क्षमता का प्रभाव पड़ता है। प्राकृतिक वातावरण जैसे– जलवायु, मिट्टी, भूमि की बनावट, जलापूर्ति के साधन और खनिज पदार्थों का मुख्य प्रभाव होता है। सांस्कृतिक तत्वों की विषमताओं के कारण भी जनसंख्या के वितरण में विषमता पायी जाती है, जिसके अन्तर्गत आर्थिक विकास की अवस्था, प्राविधिक, यन्त्र और साज –सज्जा, सामाजिक संगठन, धार्मिक विश्वास और दर्शन सम्मिलित है (वारेन एवं राबिन्स, 1940)।

अध्ययन विधि

प्रस्तुत शोध–पत्र के अध्ययन में निर्धारित उदेश्यों की पूर्ति के लिये दितियक आकड़ों को एकत्रित किया गया है। आकड़ें को जनगणना पुस्तिकायें तथा सांख्यिकीय पत्रिका से एकत्रित किया गया है। दितीयक आकड़ों के आधार पर विभिन्न उपर्युक्त सांख्यिकीय विधियों का प्रयोग कर मानचित्र एवं आरेखों की सहायता से आकड़ों का विश्लेष्ण किया गया है।

अध्ययन का उद्देश्य

अध्ययन का उद्देश्य अनुसूचित जाति विशेषकर अनुसूचित जाति महिला जनसंख्या के कालिक एवं क्षेत्रीय वितरण तथा उनके सघन एवं विरल जनसंख्या के बसाव के कारकों का अध्ययन करना है।

जनपद का स्थिति एवं विस्तार

देश की मध्य – उत्तर सीमा से संलग्न उत्तर प्रदेश के पूर्वोत्तर अंचल में स्थित गोरखपुर जनपद का विस्तार $26^{\circ}13'$ उत्तरी से $27^{\circ}6'$ उत्तरी अक्षांश तथा $83^{\circ}5'$

पूर्वी देशान्तर से 83°40′ पूर्वी देशान्तर के मध्य स्थित है। सरयूपार मैदान के पूर्वी भाग में 3321 वर्ग किमी0 क्षेत्रफल पर विस्तृत यह जनपद उत्तर प्रदेश के कुल क्षेत्रफल का 1.44 प्रतिशत है। इसकी पूर्व से पश्चिम अधिकतम चौड़ाई 105 किमी0 है। जिला मुख्यालय अध्ययन क्षेत्र के मध्य भाग में राप्ती एवं रोहिनी नदियों के संगम पर सागर तल से 102 मी0 की ऊंचाई पर (लखनऊ– बरौनी मुख्य रेलमार्ग पर) स्थित है। इसकी भौगोलिक अवस्थिति कलकत्ता (846किमी0) तथा दिल्ली (763 किमी0) के लगभग मध्य तथा इलाहाबाद एवं वाराणसी से क्रमशः 265 किमी0 एवं 210 किमी उत्तर, लखनऊ से 256 किमी0 पूर्व तथा भारत नेपाल सीमा से 100 किमी0 दक्षिण की दूरी पर है। गोरखपुर जनपद उत्तर, दक्षिण, पूर्व, एवं पश्चिम में जनपदीय सीमाओं से परिवेष्ठित है। इसकी उत्तरी सीमा पर महराजगंज, पूर्वी सीमा देवरिया, पश्चिमी सीमा संतकबीरनगर एवं शिद्धार्थनगर जनपद से निर्धारित होती है तथा दक्षिणी सीमा का निर्धारण घाघरा नदी प्रवाह मार्ग द्वारा होता है। दक्षिणी सीमा से संलग्न जनपद पश्चिम से पूर्व की ओर क्रमशः अम्बेडकर नगर, आजमगढ़, मऊ एवं बलिया जनपद हैं।

राजनीतिक प्रशासनिक संरचना

गोरखपुर भारतीय राज्य उत्तर प्रदेश का एक प्रसिद्ध जिला है। जिले का मुख्यालय गोरखपुर नगर है। गोरखपुर मण्डल में मुख्यतः 4 जिले क्रमशः– गोरखपुर, देवरिया, महाराजगंज, तथा कुशीनगर हैं। प्रशासनिक दृष्टिकोण से जनपद को 7 तहसीलों एवं 19 विकास खण्डों में विभाजित किया गया है। जिले में कुल 191 न्याय पंचायत, 1233 ग्राम सभा, तथा 3319 गांव को सम्मिलित किया गया है, जो निम्न तालिका से प्रदर्शित है। कुल आबाद ग्रामों की संख्या 2924 है।

गोरखपुर जनपद : प्रशासनिक संरचना

क्र.सं.	प्रशासनिक इकाई	संख्या
1.	तहसील की संख्या	7
2.	विकासखण्ड की संख्या	19
3.	न्याय पंचायत की संख्या	119
4.	ग्रामो की संख्या	3319
5.	ग्राम सभा की संख्या	1233

स्पष्ट है, कि जिले (जनपद) में कुल 7 तहसीलें हैं, जो क्रमशः– सदर, सहजनवां, चौरी–चौरा, बासगांव, खजनी, गोला और कैंपियरगंज हैं। विकासखण्ड क्रमशः जंगल कौड़िया, चरगांवा, भटहट, पिपराइच, खोराबार, सहजनवां, पाली, पिपरौली, चौरी–चौरा, सरदारनगर, ब्रह्मपुर, बांसगांव, कौड़ीराम, खजनी, बेलघाट, गोला, बड़हलगंज, उरुवा तथा कैंपियरगंज हैं।

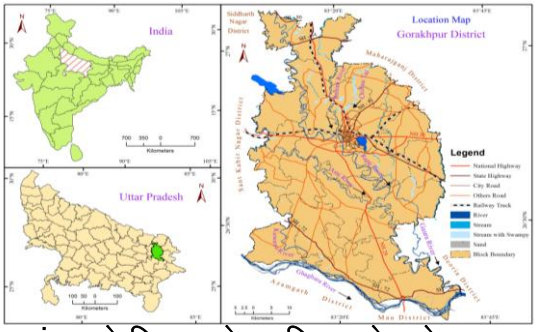

जनसंख्या के वितरण को प्रभावित करने वाले कारक

जनसंख्या के वितरण प्रतिरूप को प्रभावित करने वाले कारकों को अध्ययन की दृष्टि से दो भागों में बांटा जा सकता है –

1. प्राकृतिक कारण
2. मानवीय कारण

1. प्राकृतिक कारण

जलवायु

जनसंख्या के वितरण को प्रभावित करने वाले कारकों में जलवायु का स्थान सबसे महत्वपूर्ण है, क्योंकि जलवायु सभी भौगोलिक परिस्थितियों, भूमि के आकार, मिट्टी की बनावट, प्राकृतिक वनस्पतियों, खनिजों का निर्माण, जलापूर्ति तथा पशुओं व पौधों को नियंत्रित, प्रभावित व परिवर्तित करती है।

धरातल का स्वरूप

धरातलीय बनावट से ही उस स्थान की जनसंख्या की सघनता का आभास हो जाता है। धरातल के विभिन्न स्वरूप तथा जनसंख्या के वितरण पर उनका प्रभाव निम्न प्रकार से जाना जा सकता है, यथा– मैदानी भाग में सघन जनसंख्या व मरुस्थलीय भाग में विरल जनसंख्या मिलती है।

पर्वत

जनसंख्या के लिए पर्वत आकर्षण का केन्द्र नहीं है, क्योंकि भूमि के उबड़–खाबड़ तथा कठोर होने, ढलुवा धरातल, कठोर तथा अनुपजाऊ मिट्टियाँ, सिंचन सुविधाओं के अभाव तथा परिवहन के साधनों के अभाव के कारण यहां पर कृषि कार्य ठीक ढंग से नहीं हो सकता, जिससे जनसंख्या का बसाव नहीं होता है।

पठार

पठारी भूमि कठोर, अनुपजाऊ मिट्टी तथा विषम धरातल, कृषि तथा उधोगों के विकास में बाधक है, फलतः यहां पर पशु–पालन उधोग ही अधिक विकसित हो पता है। इसी कारण से पठारी भाग मानव के आकर्षण व बसाव के केंद्र नहीं बन पाते हैं।

मरुस्थल

मरुस्थलीय मिटटी अनुपजाऊ होने के कारण यहां पर कृषि कार्य नहीं हो पाता है। यहां पानी का अभाव, कच्चे माल की कमी, परिवहन साधनों का अभाव, श्रमिक, पूंजी, शक्ति तथा कृषि जनित पदार्थों का अभाव, उधोगों को विकसित नहीं होने देता, परन्तु खनिज के आकर्षण ने यहां पर मानव को आकर्षित किया है।

मैदान

मैदान की मिट्टी नदियों द्वारा लायी गयी अवसादी मिट्टी है। यहां पर समतल भूमि, उपजाऊ मिट्टी, सिंचाई की सुविधा, परिवहन के विकसित साधन को प्रोत्साहन देते है, तथा साथ ही साथ उधोगों को जन्म देते है। इस प्रकार कृषि तथा उधोग मिलकर जीवन के पोषक तत्वों की वृद्धि करते है और जनसंख्या का संकेन्द्रण होता है। यही कारण है कि नदियों द्वारा लाये अवसादों से निर्मित इस क्षेत्र में सघन जनसंख्या पायी जाती है।

जलापूर्ति

मानव की आवश्यकताओं में जल का स्थान, भोजन से भी पहले है। मुख्यतः घरेलू आवश्यकताओं, औधोगिक कार्यों तथा सिंचाईं के लिए जलापूर्ति की आवश्कता पड़ती है। अतः जिन प्रदेशों में नियमित जलापूर्ति की सुविधायें सुलभ होती हैं, वहां जनसंख्या का संकेन्द्रण अधिक होता है।

प्राकृतिक वनस्पति

जनसंख्या के वितरण को प्राकृतिक वनस्पतियां भी प्रभावित करती हैं। अधिक वर्षा तथा उच्च तापमान के कारण सघन वन पाए जाते हैं। इस कारण से मानव निवास के लिए उपर्युक्त पर्यावरण नहीं बन पाता है, क्योंकि अधिक तापमान एवं वर्षा अस्वास्थकर जलवायु को जन्म देती है। घास के मैदान अपनी समतलता तथा उपजाऊपन के कारण मानव के आकर्षण का केन्द्र होते हैं। इसीलिए वहां पर जनसंख्या का एकत्रीकरण हो जाता है।

खनिज संसाधन

आखेट अवस्था में जंगल तथा आखेट स्थल मानव निवास के केंद्र रहे,क्योंकि वनों से मानव फल–फूल तथा शिकार से पशु द्वारा आहार प्राप्त करता था, परन्तु पशुपालन अवस्था में घास के मैदान मानव के आकर्षण के केन्द्र बने। धीरे– धीरे मानव को खनिजों का ज्ञान प्राप्त हुआ और उसने इनकी उपयोगिता को पहचाना और खनिज पदार्थों के क्षेत्र तथा उन पर आधारित उधोगों के विकास के केन्द्र मानव आकर्षण के केन्द्र बन गए हैं।

2. मानवीय कारक

कृषि एवं पशुचारण

अध्ययन क्षेत्र समतल एवं नदियों द्वारा लायी गई मिट्टी से बना एक उपजाऊ क्षेत्र है। यहां रबी, खरीफ व जायद तीनों फसलों का उत्पादन होता है। कृषि के साथ ही साथ यहां पर ग्रामीण क्षेत्रों में पशुपालन भी किया जाता है। पशुपालन दुग्ध एवं कृषि में सहयोग हेतु किया जाता है। यधपि वर्तमान समय में कृषि में यंत्रों के उपयोग के कारण पशुओं का उपयोग लगभग नगण्य हो गया है, लेकिन दूध प्राप्ति के लिए पशुपालन किया जाता है।

उधोग–धन्धे

जनसंख्या वृद्धि के साथ–साथ मानव ने खाधान एवं अन्य आवश्कताओं की पूर्ति हेतु उधोगों का सहारा लिया, क्योंकि उधोग मानव जीवन को कृषि की अपेक्षा जीवन निर्वाह की अधिक से अधिक सामग्रियां प्रदान करते है। कृषि क्षेत्र तथा औधोगिक क्षेत्र में नगरों में जनसंख्या का केन्द्रीकरण अधिक होता है। इसके अतिरिक्त कृषि प्रदेशों की अपेक्षा औधोगिक प्रदेश अधिक जनसंख्या का भरण–पोषण करते है, इसीलिए वहां पर कृषि क्षेत्रों की अपेक्षा अधिक जनघनत्व मिलता है।

परिवहन के साधन

उत्तम परिवहन के साधन द्वारा औधोगिक व व्यापारिक दोनों प्रकार की प्रगति होती है। इससे सभ्यता तथा संस्कृति का विकास तथा राष्ट्रीय एकता की भावना भी बढ़ती है।यही कारण है कि परिवहन साधनों से सम्पन्न क्षेत्रों में अभिगम्यता अधिक होने के कारण जनसंख्या का घनत्व स्वतः ही अधिक हो जाता है।

राजनितिक कारक

किसी भी क्षेत्र में वहां की सरकार की तरफ से चलायी जा रही योजनायें भी जनसंख्या वृद्धि तथा वितरण को प्रभावित करती है। जनसंख्या का सामाजिक, आर्थिक, राजनितिक, धार्मिक स्तर पर विकास इन योजनाओं द्वारा निर्धारित होता है। मानव बसाव के अनुकूल कारणों से जनसंख्या का झुकाव उक्त क्षेत्र में या प्रदेश में होता रहता है।

आर्थिक कारक

जनसंख्या के वितरण में आर्थिक कारक भी जनसंख्या वितरण को प्रभावित करने में प्राकृतिक कारकों से कम महत्वपूर्ण नहीं होते। आज भारत में नगरों की संख्या निरंतर बढ़ रही है, इसका प्रमुख कारण आर्थिक ही है। एक ओर उन्नत सभ्यता वाले समाज में जहां विज्ञान तथा तकनीकी कुशलता उच्च स्तर की होती है, वहीं जनसंख्या के क्षेत्रीय वितरण पर भौतिक कारकों का प्रभाव कम होता है। दूसरी ओर एक प्राचीन ग्रामीण कृषक समाज प्रकृति के प्रकोपों से ग्रस्त होता है तथा ऐसा वितरण, भूमि की उर्वरता और उच्चावच से सीधे सम्बंधित होता है।

अनुसूचित जाति की जनसंख्या का कालिक एवं क्षेत्रीय वितरण प्रतिरूप (2001 एवं 2011 दशक)

वर्ष 2001 की जनगणना के अनुसार अध्ययन क्षेत्र गोरखपुर जनपद में अनुसूचित जाति का औसत वितरण 22.05 प्रतिशत (50.71 प्रतिशत पुरुष तथा 49.29 प्रतिशत स्त्री जनसंख्या) थी, जबकि वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार जनपद की कुल जनसंख्या में अनुसूचित जाति 21.08 प्रतिशत (51.40 प्रतिशत पुरुष तथा 48.60 प्रतिशत स्त्री जनसंख्या) है।

तालिका :1 गोरखपुर जनपद, अनुसूचित जाति जनसंख्या (प्रतिशत में) 2001 एवं 2011 दशक

क्र. सं.	क्षेत्र	2001			2011			दशकीय परिवर्तन (प्रतिशत में)		
		कुल	पुरुष	स्त्री	कुल	पुरुष	स्त्री	कुल	पुरुष	स्त्री
1.	ग्रामीण	24.37	50.45	49.55	23.56	51.24	48.76	–0.81	0.79	–0.79
2.	नगरीय	12.52	52.83	47.17	10.38	52.97	47.03	–2.14	0.14	–0.14
3.	योग	22.05	50.71	49.29	21.08	51.40	48.60	–0.97	0.69	–0.69

	जनपद									

स्रोत : गोरखपुर जनसांख्यिकीय पत्रिका, उतर प्रदेश

तालिक 1 से स्पष्ट है की अनुसूचित जाति की जनसंख्या का प्रतिशत ग्रामीण क्षेत्रों में अधिक है यही कारण है कि यहां क्षेत्र के औसत अनुसूचित जाति प्रतिशत से अधिक अनुसूचित जनसंख्या पायी जाती है दशकीय परिवर्तन के अनुसार कुल (–0.97), ग्रामीण (–0.87), तथा नगरीय (–2.14) क्षेत्र तीनों के संदर्भ में अनुसूचित जनसंख्या के कुल के संदर्भ में प्रतिशत में कमी आयी है। ये ह्रास नगरीय क्षेत्रों में अधिक है। अध्ययन के सुविधा की दृष्टी से अनुसूचित जाति के वितरण प्रतिरूप को दो भागों में विभक्त किया गया है –

1. अनुसूचित जाति की नगरीय जनसंख्या का वितरण प्रतिरूप
2. अनुसूचित जाति की ग्रामीण जनसंख्या का वितरण प्रतिरूप

अनुसूचित जाति का नगरीय जनसंख्या का वितरण प्रतिरूप

वर्ष 2001 की जनगणना के अनुसार जनपद में अनुसूचित जाति की कुल नगरीय जनसंख्या 12.52 प्रतिशत थी, जिसमें 52.83 प्रतिशत नगरीय पुरुष तथा 47. 17 प्रतिशत नगरीय महिला जनसंख्या का वितरण था। परन्तु वर्ष 2001 तथा 2011 के दशक में जनपद की नगरीय जनसंख्या में 2.14 प्रतिशत ह्रास हुई तथा वर्ष 2011 में कुल नगरीय जनसंख्या 10.38 प्रतिशत हो गई। नगरीय पुरुष जनसंख्या में 0.14 प्रतिशत दशकीय वृद्धि के बाद 2011 में जनपद की कुल नगरीय पुरुष जनसंख्या 52.97 प्रतिशत हो गयी। परन्तु वर्ष 2001 तथा वर्ष 2011 के दशक में स्त्री नगरीय जनसंख्या में – 0.14 प्रतिशत की ह्रास के बाद वर्ष 2011 में कुल नगरीय स्त्री जनसंख्या 47.03 प्रतिशत हो गयी (तालिका 1)।

अनुसूचित जाति की ग्रामीण जनसंख्या का वितरण प्रतिरूप (2001 – 2011 दशक)

वर्ष 2001 की जनगणना के अनुसार जनपद की कुल ग्रामीण जनसंख्या 24.37 प्रतिशत थी, जिसमें 50.45 प्रतिशत ग्रामीण पुरुष जनसंख्या तथा 49.55 प्रतिशत ग्रामीण स्त्री जनसंख्या का वितरण था। जबकि वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार जनपद की अनुसूचित ग्रामीण जनसंख्या में –0.81 प्रतिशत ह्रास के बाद कुल जनसंख्या 23.56 प्रतिशत हो गयी। वर्ष 2001–2011 के दशक में पुरुष ग्रामीण जनसंख्या में 0.79 प्रतिशत की वृद्धि हुई तथा जनपद की कुल ग्रामीण पुरुष जनसंख्या 51.24 प्रतिशत हो गयी। वर्ष 2001 तथा वर्ष 2011 के दशक में अनुसूचित स्त्री ग्रामीण जनसंख्या में –0.79 की ह्रास के बाद वर्ष 2011 में कुल ग्रामीण स्त्री जनसंख्या 48.76 प्रतिशत हो गयी।

जनपद की अनुसूचित जाति की ग्रामीण जनसंख्या के क्षेत्रीय वितरण को अध्ययन की दृष्टि से विकासखण्डों को पांच संवर्गो में विभाजित किया गया है। (तालिका 2)।

तालिका : 2, गोरखपुर जनपद, अनुसूचित जाति का जनसंख्या वितरण 2001–2011 दशक

क्रम स.	जनसंख्या प्रतिशत	संवर्ग	विकास खण्डों की संख्या		विकास खण्डों का नाम
			2001	2011	2011
1.	> 29	अति उच्च	3	4	सहजनवां, बांसगाँव, उरुवा, गोला।
2.	25–29	उच्च	6	5	सरदारनगर, कौड़ीराम, गगहा, खजनी, बेलघाट।
3.	21–25	मध्यम	5	5	पाली, पिपराइच, खोराबार, ब्रह्मपुर तथा बड़हलगंज, ।
4.	17–21	निम्न	4	4	भटहट, चरगावा, जंगलकौड़िया, पिपरौली ।
5.	<17	अति निम्न	1	1	कैम्पियरगंज।

स्रोत : शोधार्थी द्वारा परिगणित।

अति उच्च अनुसूचित जाति ग्रामीण जनसंख्या वाले विकासखण्ड (>29 प्रतिशत)

अति उच्च संवर्ग के अंतर्गत 29 प्रतिशत से अधिक अनुसूचित जनसंख्या वाले विकासखण्डों को सम्मिलित किया गया है। इस संवर्ग में 2001 के जनगणना के अनुसार जनपद के दक्षिण भाग में स्थित तीन विकासखण्ड गोला, उरुवा, तथा बांसगांव विकासखण्ड सम्मिलित है जबकि, 2011 की जनगणना के अनुसार सहजनवां के इस वर्ग में सम्मिलित होने के कारण इन विकासखण्डों की सख्या बढकर चार हो गयी है इस संवर्ग में गोला, उरुवा, बांसगाव तथा सहजनवां विकासखण्ड सम्मिलित है। जिसमें सर्वाधिक अनुसूचित जनसंख्या गोला विकासखण्ड में 30.68 प्रतिशत तथा न्यूनतम जनसंख्या 29.08 प्रतिशत सहजनवां विकासखण्ड में है।

उच्च अनुसूचित जाति ग्रामीण जनसंख्या वाले विकासखण्ड (25 –29 प्रतिशत)

उच्च संवर्ग के अंतर्गत 25–29 प्रतिशत ग्रामीण जनसंख्या वाले विकासखण्डों को सम्मिलित किया गया है। इस संवर्ग में 2001 की जनगणना के अनुसार सहजनवां, खजनी, कौड़ीराम, गगहा, सरदारनगर तथा बेलघाट कुल छः विकासखण्ड सम्मिलित थे, जबकि 2011 की जनगणना के अनुसार जनपद के कुल पांच विकासखण्ड सरदारनगर, कौड़ीराम, गगहा, खजनी तथा बेलघाट इस वर्ग में सम्मिलित हैं। इस वर्ग का एक विकासखण्ड सहजनवां अति उच्च वर्ग में सम्मिलित हो गया है।इस वर्ग में अधिकतम अनुसूचित जनसंख्या गगहा विकासखण्ड में 26.6

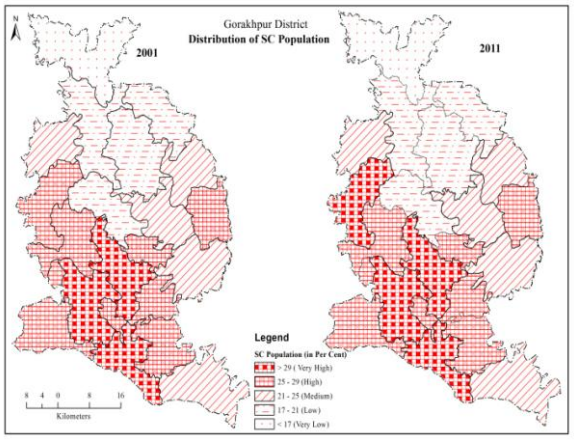

प्रतिशत न्यूनतम अनुसूचित जनसंख्या कौडिराम विकासखण्ड में 25.28 प्रतिशत है।

मध्यम अनुसूचित जाति ग्रामीण जनसंख्या वाले विकासखण्ड (21–25 प्रतिशत)

मध्मय संवर्ग के अंतर्गत 21–25 प्रतिशत के मध्य अनुसूचित जनसंख्या वाले विकासखण्डों को सम्मिलित किया गया है। इस संवर्ग में 2001 में पाली, पिपराइच, खोराबार, ब्रह्मपुर तथा बड़हलगंज कुल पांच विकासखण्ड सम्मिलित है, तथा 2011 की जनगणना के अनुसार भी इस संवर्ग में उपरोक्त पांचों जनपद ही सम्मिलित है। इस वर्ग में अधिकतम अनुसूचित जनसंख्या ब्रह्मपुर विकासखण्ड में 23.25 प्रतिशत तथा न्यूनतम अनुसूचित जनसंख्या पिपराइच विकासखण्ड में 21.45 प्रतिशत है।

निम्न अनुसूचित जाति ग्रामीण जनसंख्या वाले विकासखण्ड (17–21 प्रतिशत)

निम्न संवर्ग के अंतर्गत 17–21 प्रतिशत के मध्य अनुसूचित जनसंख्या वाले विकासखण्डों को सम्मिलित किया गया है। इस संवर्ग में 2001 तथा 2011 में भटहट, जंगल कौड़िया, चरगावां, तथा पिपरौली कुल चार विकासखण्ड सम्मिलित है। इस वर्ग में अधिकतम अनुसूचित जनसंख्या चरगावां विकासखण्ड में 19.43 प्रतिशत तथा न्यूनतम अनुसूचित जनसंख्या जंगलकौड़िया विकासखण्ड में 18.17 प्रतिशत है।

अत्ति न्यून अनुसूचित जाति ग्रामीण जनसंख्या वाले विकासखण्ड (<17 प्रतिशत)

अति न्यून अनुसूचित जनसंख्या संवर्ग के अंतर्गत 17 प्रतिशत से कम अनुसूचित जनसंख्या वाले विकासखण्डों को सम्मिलित किया गया है। इस संवर्ग में केवल एक ही विकासखण्ड कैम्पियरगंज सम्मिलित है, जिसमें अनुसूचित जाति जनसंख्या का वितरण 2001 में 16.1 प्रतिशत तथा 2011 में 15.87 प्रतिशत है।

स्पष्ट है कि सहजनवां के अतिरिक्त सभी विकासखण्डों में कुल जनसंख्या के संदर्भ में अनुसूचित जनसंख्या के प्रतिशत में कमी आई है यही कारण है कि क्षेत्र की कुल ग्रामीण जनसंख्या में अनुसूचित जनसँख्या के प्रतिशत का औसत 24.37 से कम होकर 23.56 प्रतिशत हो गया। यही स्थिति कुल जनसंख्या में अनुसूचित जाति की संख्या के सन्दर्भ में भी दिखाई देती है।

अनुसूचित जाति महिला जनसंख्या का वितरण(2001 एवं 2011 दशक)

जनगणना 2001 के अनुसार सम्पूर्ण जनपद में अनुसूचित जाति की महिलाओं का औसत वितरण 49.29 प्रतिशत था, परन्तु वर्ष 2001 तथा 2011 के दशक में कुल महिला जनसंख्या के वितरण में–69 प्रतिशत के ह्रास के बाद वर्ष 2011 में जनपद की कुल अनुसूचित महिलाओं का औसत वितरण 48.60 प्रतिशत हो गया (तालिका1)।

अनुसूचित जाति की महिला जनसंख्या के क्षेत्रीय वितरण को अध्ययन की दृष्टि से दो भागों में विभक्त किया गया है–

1. अनुसूचित जाति की महिला जनसंख्या का नगरीय वितरण प्रतिरूप।
2. अनुसूचित जाति की महिला जनसंख्या का ग्रामीण वितरण प्रतिरूप।

अनुसूचित जाति की महिला जनसंख्या का नगरीय वितरण प्रतिरूप

तालिका1 से स्पष्ट है कि जनपद में वर्ष 2001 में कुल नगरीय स्त्री जनसंख्या का वितरणे 47.17 प्रतिशत था,परन्तु वर्ष 2001– 2011के दशक में जनपद की कुल नगरीय स्त्री जनसंख्या में 0.14 प्रतिशत के ह्रास के बाद वर्ष 2011 में कुल नगरीय स्त्री जनसंख्या 47.03 हो गयी।

अनुसूचित जाति की महिला जनसंख्या का ग्रामीण वितरण प्रतिरूप

वर्ष 2001 की जनगणना के अनुसार जनपद में कुल अनुसूचित जाति की ग्रामीण स्त्री जनसंख्या 49.55 प्रतिशत थी, जबकि 2001 – 2011 के दशक में जनपद की कुल ग्रामीण स्त्री जनसंख्या में 0.79 प्रतिशत के ह्रास के बाद कुल ग्रामीण स्त्री जनसंख्या 48.76 प्रतिशत हो गयी (तालिका 1)।

अनुसूचित जाति की ग्रामीण स्त्री जनसंख्या को अध्ययन की दृष्टि से जनपद के विकासखण्डों को निम्न संवर्गों में विभक्त किया गया है (तालिका 3)।

1. अति उच्च अनुसूचित ग्रामीण महिला जनसंख्या वाले संवर्ग (>50 प्रतिशत)
2. उच्च अनुसूचित ग्रामीण महिला जनसंख्या वाले संवर्ग (49 – 50 प्रतिशत)
3. मध्यम अनुसूचित ग्रामीण महिला जनसंख्या वाले संवर्ग (48 – 49 प्रतिशत)
4. निम्न अनुसूचित ग्रामीण महिला जनसंख्या वाले संवर्ग (47 – 48 प्रतिशत)

तालिका: 3, अनुसूचित जाति की महिला जनसंख्या का स्थानिक एवं कालिक वितरण प्रतिरूप

क्र.सं.	संवर्ग का मान	संवर्ग	विकासखण्डों की संख्या		विकासखण्डों का नाम (2011)
			2001	2011	
1.	> 50	अति उच्च	7	–	–
2.	49–50	उच्च	5	5	बड़हलगंज, गोला, गगहा, कौड़ीराम, ब्रह्मपुर ।

3.	48–49	मध्यम	4	11	बेलघाट, उरुवां, बांसगांव, खोराबार, पिपराइच, सरदारनगर, भटहट, पाली, सहजनवां, खजनी, पिपरौली ।
4.	47–48	निम्न	3	3	जंगलकौड़िया, चरगांवा, कैम्पियरगंज ।
5.	<47	अति निम्न	–	–	–

स्रोत : शोधार्थी द्वारा परिगणित ।

अति उच्च अनुसूचित ग्रामीण महिला जनसंख्या वाले संवर्ग (>50 प्रतिशत)

अति उच्च संवर्ग के अंतर्गत 50 प्रतिशत से अधिक जनसंख्या वाले विकासखण्डों को सम्मिलित किया गया है। वर्ष 2001 के अंतर्गत इस संवर्ग में जनपद के बेलघाट, उरुवां, बांसगाव, कौड़ीराम, ब्रह्मपुर, गोला, तथा गगहा कुल सात विकासखण्ड सम्मिलित थे,

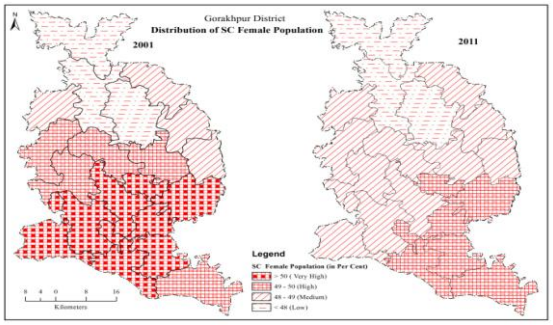

जबकि वर्ष 2011 के अंतर्गत इस संवर्ग में कोई भी विकासखण्ड सम्मिलित नही है।

उच्च अनुसूचित ग्रामीण महिला जनसंख्या वाले संवर्ग (49 – 50 प्रतिशत)

इस संवर्ग के अंतर्गत 49–50 प्रतिशत जनसंख्या वाले विकासखण्डों को सम्मिलित किया गया है। वर्ष 2001 में इस संवर्ग में खजनी, सहजनवां, पिपरौली, खोराबार, तथा बड़हलगंज कुल पांच विकासखण्ड सम्मिलित है, जबकी वर्ष 2011 में इस संवर्ग में बड़हलगंज, गोला, गगहा, कौड़ीराम, ब्रह्मपुर विकासखण्ड सम्मिलित है। इस वर्ग में अधिकतम अनुसूचित महिला जनसंख्या कौड़िराम 49.69 प्रतिशत तथा न्यूनतम अनुसूचित महिला जनसंख्या बड़हलगंज विकासखण्ड में 49.32 प्रतिशत है।

मध्यम अनुसूचित ग्रामीण महिला जनसंख्या वाले संवर्ग (48 – 49 प्रतिशत) –

इस संवर्ग के अंतर्गत 48–49 प्रतिशत जनसंख्या वाले विकासखण्डों को सम्मिलित किया गया है। वर्ष 2001 में मध्यम संवर्ग के अंतर्गत पाली, भटहट, पिपराइच, तथा सरदारनगर कुल चार विकासखण्ड सम्मिलित है तथा 2011 की जनगणना के अनुसार इस संवर्ग में बेलघाट, उरुवा, बांसगाव, खोराबार, पिपराइच, सरदारनगर, भटहट, पाली, सहजनवां, खजनी तथा पिपरौली कुल ग्यारह विकासखण्ड सम्मिलित है। इस वर्ग में अधिकतम अनुसूचित महिला जनसंख्या उरुवा विकासखण्ड में 48.99 तथा न्यूनतम अनुसूचित महिला जनसंख्या पिपराइच विकासखण्ड में 48.36 प्रतिशत है।

निम्न अनुसूचित ग्रामीण महिला जनसंख्या वाले संवर्ग (47 – 48 प्रतिशत)

इस संवर्ग के अंतर्गत 47 – 48 प्रतिशत जनसंख्या वाले विकासखण्डों को सम्मिलित किया गया है, इस संवर्ग के अंतर्गत वर्ष 2001 की जनगणना के अनुसार जनपद के उतरी क्षेत्र में स्थित विकासखण्ड कैम्पियरगंज, जंगलकौड़िया, तथा चरगावां, एवं वर्ष 2011 में भी उपरोक्त विकासखण्ड ही सम्मिलित है। अधिकतम अनुसूचित महिला जनसंख्या कैम्पियरगंज विकासखण्ड में 47.86 प्रतिशत तथा न्यूनतम अनुसूचित महिला जनसंख्या जंगलकौड़िया में 47.52 प्रतिशत है।

निष्कर्ष

निम्न अध्ययन से स्पष्ट है की जनपद में अनुसूचित जाति की महिला जनसंख्या का वितरण नगरीय क्षेत्रों की अपेक्षा ग्रामीण क्षेत्रों में अधिक है। इसका प्रमुख कारण ग्रामीण क्षेत्रों में कृषि कार्य की प्रधानता है। जनपद के दक्षिणी तथा मध्यवर्ती एवं पश्चिमी भाग में अनुसूचित महिलाओं का वितरण अधिक है जबकि उत्तरी तथा उत्तरी–पूर्वी भाग में अनुसूचित महिलाओं का वितरण अति निम्न है, क्योकि जनपद के पूर्वी भाग में वनक्षेत्र की अधिकता है तथा रोजगार के साधनों की कमी है।

संदर्भ ग्रंथ

1. *Chandana, R.C.and Sidhu,M.S,(1980): Population Geography, Kalyani Publishers, New Delhi : 96 and 19.*
2. *Clark, J.I. (1972) : Population Geography, Peragamon Press, Oxford : 66.*
3. *Chauhan, P.R. (1990) –"A Geographical Study of Regional Disparities In The Level of Development of Madhya Pradesh," Unpublished Ph.D. thesis, Deptt of Geography, D.D.U. Gorakhpur University, PP. 153.*
4. *Dubey, K.K. and Singh, M.B. (1994) :Population Geography, Rawat Publiccation, Jaipur, New Delhi : 34-41.*
5. *Finch and Trewarth, G.T. (1968) : Elements of Geography (Physical and Cultural), London :56-58,*
6. *H. Lal (1972): Population Geography, Vashundhra Prakashan, Gorakhpur :29,35 and 71.*
7. *नाग, पी० एवं निषाद अजय, (2017) :जनसंख्या भूगोल, वसुन्धरा प्रकाशन, गोरखपुरः 54.*
8. *Pandey, J.A. (1972): Distribution of Rural Settlment in Lower Ganga- Gomati Doab, Uttar Bharat Bhugol Patrika, Vol.2, NO. 2:101-115.*
9. *Rechard, I. (1978) : Population and Settlements in Merrut District, unpublished Ph.D. thesis, Gorakhpur University, Gorakhpur : 163.*
10. *Singh, O.P. (1973) :Population Geography of Uttar Pradesh, unpublished Ph.D thesis, B.H.U., Varanasi :16.*
11. *Tiwari, R.C. (1972) : A Critical of Research Methodology of Rural Settlment in India, National Geography, Allahabad,Vol.-7 : 67.*